



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा



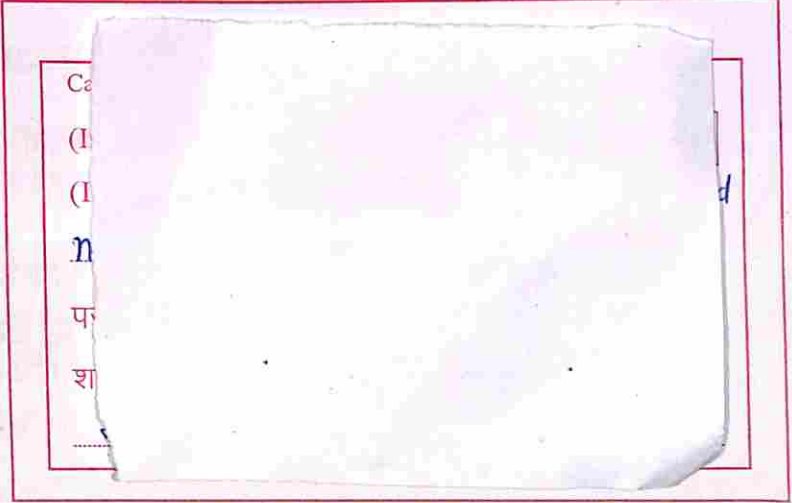
(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	5
2	6	20	5
3	6	21	5
4	6	22	
5	6	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक 34954



नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी ☒ अंग्रेजी ☐

विषय हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन मंगलवार

दिनांक 10 - 03 - 2026

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 181/2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:-
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्व्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस-पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

[खण्ड - अ]

1.

12

(i)

(क) चंबल

(ii)

(अ) 1956

(iii)

(स) बैर का

(iv)

(ब) जगधर की

(v)

(स) सब लोग अपनी आंखें बंद कर ले।

(vi)

(क) स्नान के बाद चंदन के तिलक के बगैर।

(vii)

(ब) हिमालय किधर है?

(viii)

(क) सहावट

(ix)

(स) आभिजय

(x)

(ब) बोले जाने वाले शब्द

(xi)

(ब) शीर्ष पर

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(Xii)

(स) कैसे.

2.

(6) (i)

ओज

(ii)

क्लिष्टत्व दोष

(iii)

अर्धात्मकार

(iv)

विशेषोक्ति

(v)

कविता

(vi)

यमाताराजभानसलगा

3.

(6)

(i)

प्रसाद गुण → जिस काव्य को पढ़ते ही
उसका अर्थ सरलता से
समझ में आ जाए उसे प्रसाद गुण
कहते हैं। प्रसाद का अर्थ स्वच्छता या
निर्मलता होता है।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		छंद दो प्रकार के होते हैं -
	(ii)	मात्रिक छंद 1. वर्णिक छंद 2.
	(iii)	कथानक के द्वारा ही कहानी का निर्माण होता है एवं कथानक को कल्पना के सहारे ही साकार रूप दिया जा सकता है। अतः एक अच्छी कहानी लिखने के लिए भाषा का ज्ञान, पात्रों का स्वरूप व द्वन्द्व कहानीकार के सामने स्पष्ट होने चाहिए।
	(iv)	कभी - कभी कविता लेखन के सन्दर्भ में मुक्त छन्द की शैली कवि की ताकत बन जाती है। कवि इससे अर्थ को समझाने के प्रयास द्वारा दर्शकों से जुड़ जाता है।
	(v)	संपादक के नाम पत्र समाचार पत्र में संपादकीय पृष्ठ पर या मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाला स्तंभ है। यह पाठकों का स्तंभ होता है जिसमें पाठक किसी मुद्दे, समस्या के संबंध में अपनी राय व्यक्त करते हैं।
	(vi)	किसी भी घटना को सजीव एवं रोचक

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

प्रस्तुत करना हो फीचर कहलाता है।
फीचर एक सृजनात्मक, सुव्यवस्थित व
आत्मनिष्ठ लेखन शैली है जिसका उद्देश्य
मनोरंजन करना या शिक्षित करना होता है।

4.

(i)

(क) प्रासंगिक

(ii)

(ख) इमा

(iii)

(क) भारत से अदम्य जीवन शक्ति का
संचार हुआ।

(iv)

गद्यांश का उचित शीर्षक होगा -
'भारत की सांस्कृतिक चेतना'

(v)

सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति
सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित
धार्मिक भावना और दार्शनिक चिन्तनधारा
के माध्यम से हुई।

(vi)

गद्यांश का मुख्य प्रतिपाद्य भारत की समन्वय
साधना की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालना है।
भारत से समस्त कविनाइयों का सामना करते



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		हुए भी मानव <u>प्रसन्नचित</u> होकर जीवन यापन करता है।
	5.	
(6)	(i)	(स) <u>सदभाव आधारित आपस में व्यवहार करें।</u>
	(ii)	(द) <u>अच्छे व्यवहार वाला</u>
	(iii)	(ब) <u>दिव्यतापूर्ण जीवन को</u>
	(iv)	पहोरा का <u>अचित शीर्षक</u> होगा - <u>'हम सदाचारी बने'</u>
	(v)	कवि प्रभु से <u>सदाचारी बनने को</u> , सत्य बोलने की <u>दुष्टियों से दूर रहने को</u> तथा आपस में <u>मेल भाव रखने को</u> प्रार्थना कर रहा है।
	(vi)	पहोरा के <u>अनुसार</u> कवि कभी भी अपकार कार्य नहीं करना चाहता। साथ ही, वह झुठ भी नहीं बोलना चाहता।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

[खण्ड - ब]

(2)

6. सुरदास की वह पौटली उसकी जीवन भर की आशाओं का आधार थी। उसमें उसकी जीवन-भर की सारी संचित कमाई थी। वह उन पैसे से मिठुआ का विवाह करवाना चाहता था। इसलिए पौटले का खो जाना सुरदास के लिए एक बड़ी क्षति थी।

(7)

7. 'बिस्कोहर की मारी' पाठ में लेखक ने बताया है कि जब गाँव में बारिश आती थी तो ऐसा प्रतीत होता था मानो छोड़े दौड़ते हुए आ रहे हैं। बच्चों के साथ-साथ जानवर भी प्रसन्नचित होकर गलियों में दौड़ते हुए नजर आते थे। खेत पानी से भर जाते थे परन्तु साथ ही साथ गलियों में भी कीचड़ भी बढ़ जाता था जिससे कई छोटे-छोटे जीव पैदा हो जाते।

8. अपना मालवा पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि मालवा के सभी राजा प्राचीनकाल से ही जल-संग्रहण के महत्व



प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

व तकनीक को जानते थे। चाहे विक्रमादित्य हो या भोज सभी ने इसकी पहोड़ियों पर वर्षा के जल को रोककर रखा ताकि जल संकट का सामना न करना पड़े तथा भूमि के गर्भ से भी जल को सुरक्षित रखा जा सके।

9.

देवसेना को अपने जीवन में भ्रमण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। वह स्कंदगुप्त से प्रेम करती थी परन्तु उसने देवसेना के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया। अन्त में देवसेना को राष्ट्रसेवा का व्रत लेना पड़ा जिस कारण वह संपूर्ण जीवन अविवाहित रही। अपने जीवन की इन्हीं कठिनाइयों व भ्रमण दुखों को देखकर देवसेना ने कहा कि प्रलय स्वयं मेरे जीवन रूपी रथ पर सवार है।

10.

मालिक मौहम्मद जायसी कृत बारहमासा के अनुसार फागुण के महीने में सर्दी चार गुना अधिक बढ़ जाती है। इससे नागमती का हृदय धर-धर कांप रहा है। उसकी सभी सहेलिया फागुण के गीत गाती हैं परन्तु उसे वह अच्छे नहीं लगते। वह चाहती है कि वियोग की पीड़ा से जलने के पश्चात् उसकी राख उसके प्रियतम को स्पर्श

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

करे। वह इसी से संयोग के रस की अनुभूति करेगी।

11.

'अज्ञेय' का साहित्यिक परिचय

* 'अज्ञेय' का जन्म सन् 1911 में कुशीनगर उत्तरप्रदेश में हुआ था।

* वे प्रारंभ से विज्ञान के विद्यार्थी थे तथा बाद में अंग्रेजी में एम.ए. किया।

* अज्ञेय तारसप्तक के प्रवर्तक थे। प्रत्येक सप्तक में सात कवियों की रचनाएँ संकलित हैं।

* रचनाएँ - कितनी नावों से कितनी बार, इन्द्रधनुष रोदे हुए थे, हरी घास पूर क्षणभर, आंगन के पार द्वार, विषधगा, शरणार्थी, जयदीप, त्रिशंकु आत्मने पदे, एक बुँद सहसा उछली, ये तेरे प्रतिरूप, बावरा अहरी, अरी ओ करुणा प्रभामयी

* पुरस्कार 3 साहित्य अकादेमी पुरस्कार,



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

भारत भारती पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

* अज्ञेय ने कविता के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, कहानी व अनेक साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया है।

* कुछ समय तक वे जोधपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में भी कार्यरत रहे

* वे चार वर्ष जेल में रहे तथा दो वर्ष नजरबंद।

* उनकी संपूर्ण रचनाओं में जहां गहरी वैचारिक समझ है वहीं मानव-मात्र के प्रति दया का भाव भी है।

12.

बालक द्वारा इनाम से लड्डु मांगे जाने पर पिता व अध्यापक नाराज हो गए थे क्योंकि उन्होंने अपेक्षा की थी कि यह पढ़ाई का पुतला जरूरी को पुस्तक मांगेगा। वह बालक से बाल-प्रवृत्ति दर्शाने की कोई अपेक्षा नहीं करते थे। वह चाहते थे कि वो केवल रही-रहसि भाषा में जवाब देता रहे। परंतु बालक द्वारा लड्डु मांगे जाने पर लेखक प्रसन्न ही होता है क्योंकि यह उसके बच जाने की उम्मीद थी।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

13. किसान को साझे की खेती के लिए हाथी ने पट्टी यवाई थी। हाथी ने उसे झाँसे देते हुए कहा कि मेरे साथ साझे की खेती करने से तुम्हारा ही लाभ होगा। मैं खेत की रखवाली किया करूँगा जिससे जंगल के छोटे-मोटे जानवर फसल को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। परन्तु अन्त में हाथी उसे बराबर बंटवारे का कहकर सारी फसल गड़प कर जाता है। यह हाथी वास्तव में समाज का धनाढ्य वर्ग है।

BSER-181/2026

14.

'रामचंद्र शुक्ल' का साहित्यिक परिचय

* रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 में उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के अगौना गाँव में हुआ था।

* शुक्ल जी हिंदी के उच्चकोटि के साहित्यकार, निबंधकार व आलोचक थे।

* वे नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़े थे तथा इसके लिए उन्होंने हिंदी शब्द सागर की भूमिका के तौर पर हिंदी साहित्य का इतिहास लिखा।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

* शुक्ल जी ने हिंदी कवियों को सम्यक् समीक्षा की। उनका इतिहास में स्थान निर्धारित किया।

* रचनाएँ — हिंदी साहित्य का इतिहास, इस मेंमासा, सुरदास, गौस्वामी तुलसीदास, चिंतामणी (चार भाग), कालिदास की लातित्य योजना

* शुक्ल जी की गद्य शैली विवेचनात्मक है।

* उनके साहित्यिक बोध में जहाँ हिंदी की गहरी समझ व वैचारिक शक्ति है वही भावनात्मकता के साथ विषय पर गहरी पकड़ भी है।

* उन्होंने कुछ समय तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया।

15. मानवीकरण अलंकार — जब किसी अङ्ग-पदार्थ पर मानवीय भावनाओं का आरोप किया जाता है तो वहा मानवीकरण अलंकार होता है।
जैसे -

(1) उषा सुनहरे तीर बरसती।
या

(2) पेड़ो ने झुककर सलाम किया।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

[खण्ड - स]

16.

‘सरोज स्मृति’ कविता एक पिता के द्वारा पुत्री के वियोग में लिखा गया शोक-गीत है। इसमें निराला अपनी पुत्री के विवाह के क्षणों का स्मरण करते हैं कि किस प्रकार उनकी पुत्री के चेहरे पर भाविष्य के सुंदर सपने थे और वह किस भाव से अपने पिता की ओर देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रही थी। निराला कविता में बताते हैं कि उनकी पुत्री ही उनके जीवन का एकमात्र वंशत थी परन्तु आज उसकी मृत्यु से उनका यह शंबल भी टूट गया। अब उनके जीवन की कथा केवल दुःखों से ही भरी है। पिता के संघर्षों को रेखांकित करते हुए निराला ने कहा है कि वह पुत्री को माँ द्वारा दी जाने वाली कुल शिक्षा देते व माँ की सच्ची प्रकार की भूमिकाओं का पूरी तरह से निर्वहन करते।

17.

लेखक सन् 1983 में सिंगरौली गया था वहाँ उसने अनुभव किया कि विस्थापन से पूर्व लोग किस प्रकार का

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

3 जीवन जीते हैं। परन्तु विकास के नाम पर हो रहे पर्यावरणीय विनाश से लोगों का जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाता है। वह किसी बड़े शहर की गंदी बस्ती में एक उन्मुलित जीवन बिताने के लिए बाध्य हो जाते हैं। औद्योगीकरण के इस झंझावात से केवल लोग ही नहीं उजड़ते बल्कि उनकी संस्कृति, आवास व परिवेश भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। अतः वर्तमान युग में विकासात्मक कार्यों के साथ लोगों का व उनकी संस्कृति का समन्वय आवश्यक है।

BSER-18/1/2026

18.

2 सुरदास को जब लाख प्रयत्न करने पर भी अपनी पौटली नहीं मिली तो वह राख के ढेर पर बैठकर रोने लगा। तभी उसे एक आवाज सुनाई दी वह धीसु की आवाज थी उसने कहा कि खेल में नहीं रोना चाहिए। तब सुरदास के मन में विचार कौंधा कि बच्चे भी खेल में रोने को बुरा मानते हैं। यह जीवन भी तो एक खेल ही है। इसमें तो हार-जीत, सुख-दुःख क्रमवत् आते ही रहते हैं परन्तु सच्चा खिलाड़ी तो केवल वही है जो इन सबकी परवाह किए बिना निरंतर आगे बढ़ता जाए तथा कभी हार न माने। धीसु



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

के इस कथन से सुरदास में सकारात्मक
का संचार हुआ तथा उसने जोषी के
पुनर्निर्माण के विषय में सोचा।

[खण्ड - द]

19.

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वरनाथ
रेणु द्वारा रचित 'संवदिपा'
पाठ से लिया गया है। इसमें लेखक
ने संवदिपा की विशेषता बताई है।

व्याख्या → लेखक बताते हैं कि लोगों
की संवदिपा के प्रति गूढ़
धारणा है। वास्तविकता तो यह है कि
संवाद पहुंचाने का काम सभी व्यक्ति नहीं
कर सकते। एक व्यक्ति की संवदिपा
बनाकर भगवान स्वयं अपने घर से
भेजते हैं। संवाद के प्रत्येक शब्द को
याद रखना तथा उसे हृ-ब-हृ जाकर
कहना कोई सरल काम नहीं। परन्तु
गांव वाले लोग सोचते हैं कि केवल
कामचोर या पैटू व्यक्ति ही संवदिपा
बनता है। उसे अपने पारिवारिक जीवन
की कोई गह नहीं होती उसकी रुचि
तो केवल स्त्रियों की बातों में ही



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

होती है। आखिर बिना मजदूरी के ही
गांव - गांव घूमने वाले व्यक्ति को और
क्या कहेंगे।

विशेष -

(i) लेखक ने काम के महत्व को
प्रतिष्ठापित करते हुए कहा है कि सभी
काम बड़े होते हैं तथा कोई काम हीन
नहीं।

(ii) एक तरफ जहां संवादिया की विशेषताएं
हैं वहीं उसकी कमियों को भी उजागर
करने का प्रयत्न किया गया है।

(iii) भाषा सहज, सरल व खड़ी-बोली है।
अंशकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(iv) लेखक ने संवादिया के प्रति अपनी
(v) सहानुभूति व्यक्त की है।

20. प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की
पाठ्यपुस्तक अंतरा - भाग 2 के विद्यापीते
द्वारा रचित पदावली से लिया गया है।
इसमें कवि ने नायक के वियोग में
नायिका की मनोदशा का वर्णन प्रस्तुत
किया है।

व्याख्या ⇒ नायिका अपनी साथि से कहती
है कि मैं साथि। ऐसा कौन



परीक्षक द्वारा
प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

हैं जो मेरा पत्र मेरे प्रियतम पति के पास ले जाएगा। उन्हें मेरे विरह के दुःख से कौन अवगत कराएगा। अब तो सावन का महीना भी आ गया है प्रकृति में नया परिवर्तन हो रहा है परन्तु मेरे जीवन में केवल वियोग की पीड़ा है। अब मुझसे प्रियतम के बिना इस भवन में अकेले रहा नहीं जाता। हे साखी, यह एक भीषण दुःख है तथा इस पर जग के लोग विश्वास नहीं करेंगे। मेरा मन तो मेरा प्रियतम पति अपने साथ हरण करके ले गए है। पता नहीं, उन्होंने गोकुल छोड़कर मधुरा बसने का अपयश क्यों लिया होगा। अब मेरा मन तो मेरे नियंत्रण में नहीं है। ऐसे में केवल वियोग के कारण हृदय दुःखी होता है।

विशेष ⇒

- (i) पद मैथिली भाषा में रचित है।
- (ii) अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश व श्लेष अलंकार का प्रयोग हुआ है।
- (iii) पद में विरहणी के मन की करुण दशा का वर्णन किया गया है।
- (iv) करुण रस व वियोग लिंगार रस पद की भाषा सहज व सरल है तथा
- (v)



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

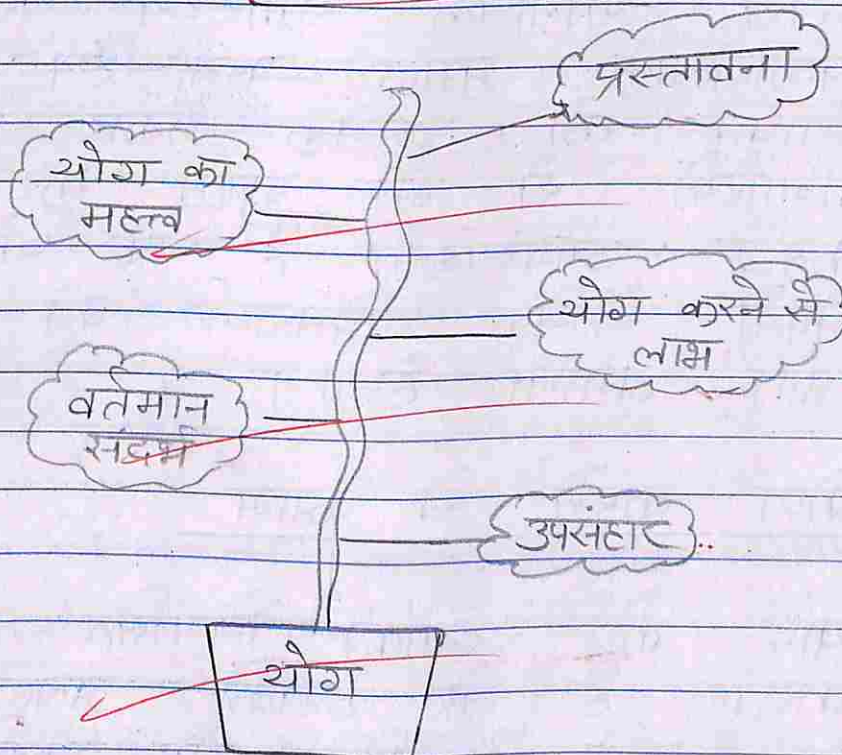
परीक्षार्थी उत्तर

माधुर्य गुण है।

21.

निबंध लेखन

नियमित योग: आज की मंली आवश्यकता



1. प्रस्तावना - योग का हमारे दैनिक जीवन में अत्यधिक आवश्यकता है। भारत में तो योग की संस्कृति अति प्राचीन है वही इसके त्रेषि- मुनियों से



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

ही योग की उपज मानी जाती है। भार
ने संपूर्ण विश्व को योग का संदेश
दिया है।

(ii) योग का महत्व

योग करने से न केवल शारीरिक
स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है बल्कि
इससे मानसिक स्वास्थ्य पर भी
सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। योग एक
व्याक्ति को अनेक प्रकार की जटिल
बीमारियों से भी मुक्त कर देता है।
केवल आवश्यकता है कि योग को हम
अपनी दैनिक दिनचर्या का ही एक
अंग बनाना होगा।

(iii) योग करने से लाभ

यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से योग
करता है तो इसकी प्रबल संभावनाएँ
हो जाती हैं कि उसे किसी भी प्रकार
की बीमारी हो। यह जहाँ हमें
चिकित्साकीय खर्च से बचाता है व वहाँ
दुसरो को भी प्रेरणा का स्रोत प्रदान
करता है। योग करने से हम एक
सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव करते
हैं तथा दिनभर स्फूर्तिवान बने रहते हैं।

क द्वारा
अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iv)

वर्तमान सन्दर्भ में योग की आवश्यकता -

वर्तमान पीढ़ी ~~अहाँ~~ आधुनिकता को चपेट में आकर ~~पश्चिमी~~ संस्कृति को अपना रही है वही ~~भारत~~ ने संपूर्ण विश्व को योग का संदेश ~~कि~~ दिया है। इसने संपूर्ण संसार में योग की भावना के प्रति लोगों को ~~आकर्षक~~ किया है। योग के महत्व के दर्शने के लिए अब तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योगादिवस ~~ब~~ भी मनाया जाने लगा है। वर्तमान में बढ़ती बिमारियों, फैलती महामारियों ने ~~अहाँ~~ जीवन पर संकट बढ़ा दिया है तो ऐसी स्थिति में योग और भी अधिक प्रासंगिक बन जाता है।

(v)

उपसंहार -

योग ने न केवल हमारी प्राचीन संस्कृति को ~~जीवित~~ रखा है बल्कि इसने मानव स्वास्थ्य संबंधी विकल्प उपलब्ध करवाते हुए उसे पर्यावरण तथा प्रकृति से जोड़ने का कार्य भी किया है। अतः यह अति आवश्यक है कि योग का महत्व समझते हुए हम उसे अपनी दिनचर्या का अंग बनाएं।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

‘योग से ही होता जन-कल्याण
उसे बनाओ तुम अपना मान’

अक्ष
80
80
49

(समाप्त)



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-J8/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

PSED-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

